



Shri. Shivaji Education Society, Amravati's

## ARTS AND COMMERCE COLLEGE, JARUD

Website: [www.artscollegejarud.org](http://www.artscollegejarud.org)

### Criterion 3: Research, Innovations and Extension

**3.3.2** Number of books and chapters published in conference proceeding per teacher during last five years

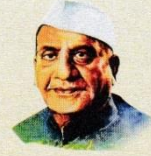


# ARTS AND COMMERCE COLLEGE, JARUD

(run by Shri Shivaji Education Society, Amravati)

Tah. Warud, Dist. Amravati - 444 908

Website : [artscollegejarud.org](http://artscollegejarud.org), E-mail : [accjarud@gmail.com](mailto:accjarud@gmail.com) (College Code :137)



NAAC Accredited 'B' Grade

President

**Shri Harshwardhan Deshmukh**  
Shri Shivaji Education Society, Amravati

Principal

**Dr. G. R. Tadas**  
M.A.(Economics),M.Phil,Ph.D.

Founder President

**Dr.Panjabrao alias Bhausaheb Deshmukh**  
M.A., D.Phil.,L.L.B.Bar-at-Law

Date : 15/05/2023

## Declaration

This is to declare that the information, Reports, true copies and numerical data etc. furnished in this file as supporting documents is verified by IQAC and found correct.

**DR. A. B. KUKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud

Principal  
**Arts & Commerce College**  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati



# महाराष्ट्रा की जनजाति Tribe of Maharashtra

महाराष्ट्र की जनजातियाँ इस क्षेत्र के आदिम लोग हैं और राज्य के विभिन्न हिस्सों में बिखरे हुए हैं। अधिकतर वे पहाड़ी क्षेत्रों के निवासी हैं। कुछ जनजातियाँ आदिम और खानाबदोश चरित्र की हैं। महाराष्ट्र की ये जनजातियाँ खेती और कृषि, कंदमूल से जुड़ी अन्य गतिविधियों में शामिल हैं। वैशा जनजाति महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में स्थित एक आदिम द्रविड़ जनजाति है। ये छोटी अनुसूचित जनजातियाँ हैं, जो अभी भी वन संसाधनों पर निर्भर हैं। ये राज्य के सबसे दूरस्थ क्षेत्रों में रहते हैं, ज्यादातर झारखंड, मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र के जंगल और पहाड़ी इलाकों में होती हैं। वैशा जनजाति को 'भूमिया' अर्थात् 'मिट्टी का स्वामी' के रूप में भी जाना जाता है। यह महाराष्ट्र में एक छोटी अनुसूचित जनजाति है। ये लोग मुंबई, पुणे, ठाणे और महाराष्ट्र में रहते हैं। महाराष्ट्र में, जनजाति का उल्लेख किया है कि उनकी मातृभाषा मराठी है। वे हिंदी, तेलगु, गोंडो, कोरक, भील, कोलामी, पारधी अन्य भाषा भी बोलते हैं। यह ग्रंथ विद्यार्थियों और शोधकर्ता को उपयोगी रहेगा।



**डॉ. राम कुलसगे** समाजशास्त्र में स्नातक और पारानातक, स्नातकोत्तर की शिक्षा नागपुर विश्वविद्यालय से प्राप्त की है, एम.ए., पीएच.डी. (समाजशास्त्र) अमरावती विश्वविद्यालय से प्राप्त की है, एवं नागपुर विश्वविद्यालय से मैरिट रह चुके हैं। वर्तमान में आर्ट एण्ड कामर्स कालेज जूड, अमरावती (महाराष्ट्र) में समाजशास्त्र विभाग प्रमुख पर कार्यरत हैं एवं अमरावती विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के पीएच.डी. के मार्गदर्शक हैं। इसे पहले 'मातोश्री विमलबाई देशमुख महाविद्यालय' अमरावती (महाराष्ट्र) में 18 साल समाजशास्त्र विभाग प्रमुख रहे चुके हैं। पच्चीस साल से महाविद्यालय और सामाजिक क्षेत्र में व्याख्यात हो चुके हैं। लेखन की रुचि एवं स्तंभाय से आदिम समाज के अध्ययन पर अग्रगण्य रहे हैं। अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय विभिन्न जर्नल और संगोष्ठियों में अनेक शोध निवन्ध प्रकाशित हुए हैं। विभिन्न पात्रिका और वर्तमान पत्र में आर्टिकल प्रकाशित हो चुके हैं। सामाजिक शास्त्र जर्नल को संपादक रहे चुके हैं। यूजीसी अकादमी स्टाफ कॉलेज के रिफ्लेक्शन कोर्स, शार्ट टर्म कोर्स, एवं ऑरिएंटेशन में सहभाग हो चुके हैं। आदिम समाज क्षेत्र में अध्ययन कि भारी रुचि है। महाराष्ट्र के आदिम समुदाय में 'पढ़ने का तजरुबा' अध्ययन में भारी रुचि से काफी काम किए और बहुत काम करने की इच्छा बतलाई गई है।

महाराष्ट्रा की जनजाति

डॉ. राम कुलसगे



# महाराष्ट्रा की जनजाति Tribe of Maharashtra



DR. A. B. KUKADE  
Co-ordinator,  
Dr. Ram Kulsase's Centre, Jai

डॉ. राम कुलसगे

**इशिका पब्लिशिंग हाउस**  
पृ- 25, "मणिसा सदन", मंगेश 4, आनंदी बस्ती,  
बी.एल. हाउस के पास, टोक फाटक,  
अमरावती-402018 (राजस्थान) भारत  
फोन-0141-2761280, 9887532741  
Email- ishikapublishinghouse@yahoo.in  
दिल्ली कार्यालय: 102, प्रान्त मंत्रालय, 'भारत' हाउस  
4327/3, अंसारी रोड, हरियाणा, नई दिल्ली-110002  
फोन: 011-456524/0

ISBN 9789336654414

₹ 1575/-




# महाराष्ट्रा की जनजाति Tribe of Maharashtra

डॉ. राम कुलसंगे

  
**DR. A. B. KULKADE**  
Co-ordinator  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati

  
**इशिका पब्लिशिंग हाउस**  
जयपर      दिल्ली

## इशिका पब्लिशिंग हाउस

ए-25, "गणेश सदन", गली न. 4, आदर्श बस्ती,  
बी.एल. हाउस के पास, टॉक फाटक,  
जयपुर-302018 (राजस्थान) भारत  
फोन : 0141-2761280, Mob. 9887532741  
Email: ishikapublishinghouse@yahoo.in

दिल्ली कार्यालय : 102, प्रथम मंजिल, 'सत्यम हाउस'  
4324/3, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002  
फोन : 011-45652440

© लेखक, 2021

ISBN: 9789388454414

मूल्य : ₹ 1575.00

प्रकाशन से पूर्व लिखित अनुमति प्राप्त किये बिना मात्रा उद्धरण के अतिरिक्त अन्य किसी भी उद्देश्य से इस  
ग्रन्थ के किसी भी अंश का किसी भी रूप में यांत्रिक, इलेक्ट्रॉनिक, फोटोस्टेट, ध्वन्यालेखन अथवा अन्य  
किसी भी विधि से प्रतिलिपीकरण, प्रेषण अथवा अनुवाद सर्वत निषिद्ध है।

टाइपसेटिंग : बी.एस. कम्प्यूटर्स, जयपुर

मुद्रक : थॉमसन प्रेस, नई दिल्ली  
**DR. A. B. KUKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
**Arts & Commerce College**  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati

## अनुक्रमणिका

प्रस्तावना	v
1. ओंध	1
2. बेंगा	4
3. बरडा	7
4. बावचा, वामचा	8
5. भारिया, पूरिया	10
6. बैना	14
7. भील	15
8. भन्ना	33
9. भुजिया	34
10. विंझवार	38
11. विरहुल, विरहोर	43
12. धानका, तडवी, तैतारिया, बलवी	50
13. धनवार	57
14. धोडिया	59
15. दुबला, तलरिया, हलपती	62
16. गोमित, गामटा, गावीत, मावची, पाडवी	66
17. गोंड	70
18. हलवा, हलवी	98
19. कमारं	103



20. काथोडी, कातकरी	105
21. कवर, कंवर, कौर	110
22. खैरवार	113
23. खारिया	117
24. कोकणा, कोकणी, कुकणा	120
25. कोल	125
26. कोलाम, मन्नेरवारलु	127
27. कोली ढेर, टोकरे कोली	133
28. कोली महादेव, डोंगर कोली	134
29. कोली मल्हार	138
30. कोंढ, खोंड, कंध	139
31. कोरकु, बोपची, मौआसी	143
32. कोया, भीनकोया, राजकोया	151
33. नागशिया, नागेशिया	153
34. नाईऋडा, नायका	154
35. ओरोन	156
36. परधान, पाथरी, सरोटी	159
37. पारधी, आडवीचिंचोर	162
38. परजा	167
39. पटेलिया	168
40. राथवा	169
41. सावर, सांवरा	172
42. ठाकूर, ठाकर	177
43. वारली	179
44. विटोलिया, कोटवालिया, वारोडिया	186

DR. A. B. KUYADE  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati

## प्रस्तावना

महाराष्ट्र की जनजातियाँ इस क्षेत्र के आदिम लोग हैं और राज्य के विभिन्न हिस्सों में बिखरे हुए हैं। अधिकतर वे पहाड़ी क्षेत्रों के निवासी हैं। कुछ जनजातियाँ आदिम और खानाबदोश चरित्र की हैं। महाराष्ट्र की ये जनजातियाँ खेती और कृषि से जुड़ी अन्य गतिविधियों में शामिल हैं। बैगा जनजाति महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में स्थित एक आदिम द्रविड़ जनजाति है। ये छोटी अनुसूचित जनजातियाँ हैं, जो अभी भी वन संसाधनों पर निर्भर हैं। वे राज्य के सबसे दूरस्थ क्षेत्रों में रहते हैं, ज्यादातर झारखंड के जंगल और पहाड़ी इलाकों में। बैगा जनजाति को 'भूमिया' अर्थात् 'मिट्टी का स्वामी' के रूप में भी जाना जाता है। यह महाराष्ट्र में एक छोटी अनुसूचित जनजाति है। ये लोग मुंबई, पुणे, ठाणे में रहते हैं। महाराष्ट्र में, उन्होंने उल्लेख किया है कि उनकी मातृभाषा मराठी है। वे हिंदी, तेलगु, गोंडी, कोरकू, भील, कोलामी, पारधी अन्य भाषा भी बोलते हैं।

भारिया, भूजिया जनजाति में कुल 51 अंतरजातीय समूह हैं। वे बागोवा, नागोवा और भीमसेन की पूजा करते हैं। भूमिया बैगा लोगों का एक उपखंड है। वे मध्य प्रदेश के मंडला जिले और रवा क्षेत्र में रहते हैं। ये लोग गोंडवानी या मंडलाहा नामक हिंदी की एक बोली बोलते हैं। 'सतपुड़ा क्षेत्र' को मुख्य रूप से भील क्षेत्र के रूप में जाना जाता है। यह क्षेत्र सतपुड़ा पर्वत शृंखलाओं में बिखरा हुआ आदिम समाज है। गुजरात और मध्य प्रदेश की पर्वत शृंखलाओं में बसा हुआ है और सतपुड़ा पर्वतमाला महाराष्ट्र के विद्रम मराठवाडा, कोकन, सहेन्दी



Sem-2

2020-21

# भारतीय संविधानातील तरतुदी आणि स्थानीक स्वशासन



प्रा. डॉ. व्ही.एच. भटकर

प्रा.डॉ. प्रमोद तालन

प्रा.डॉ. पंकज नंदेश्वर

वी आर पब्लीकेशन हाऊस

  
**DR. A. B. KULKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
**Arts & Commerce College**  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati



भारतीय संविधानातील तरतुदी आणि  
स्थानीक स्वशासन

■ प्रकाशन क्र - १

■ प्रकाशन दिनांक  
२७ ऑक्टोबर २०२०

© प्रा. डॉ. व्ही. एच. भटकर  
“श्री” ४६-अ, पूर्वा टाऊनशिप, अर्जुन नगर  
ते शेगाव नाका रोड, अमरावती-४४४६०४  
मो. ९४२१७९०१०३, ७७९८०५८७५९.

■ प्रकाशक

श्री. राहुल वि. मेश्राम

वी आर पब्लिकेशन,

अलमास नगर, एम. आय.डी.सी. रोड,

अनवर मार्केट, बडनेरा, अमरावती. ४४४७०२

मो.-९०११३१७७०३, ९३५९९४१५३१

■ मुखपृष्ठ संकल्पना

अनुप पेटले, बडनेरा, अमरावती.

■ अक्षर जुळवणी

सुवर्णा शिंदे, अमरावती.

■ मुद्रक

‘अंबा प्रिंटर्स’

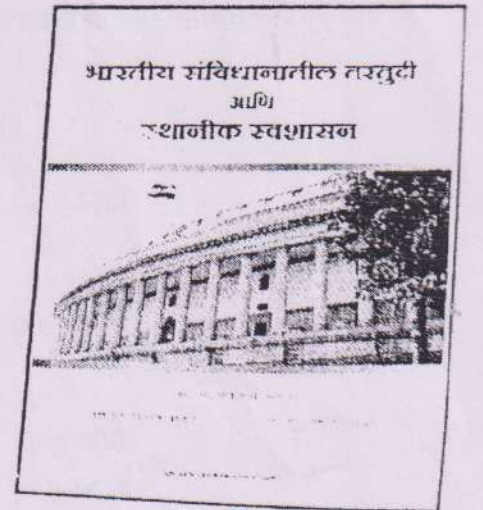
जुनी वस्ती, बारीपुरा, बडनेरा

■ ग्लोबल मार्केटींग सर्व्हिसेस

विकास राऊत, अमरावती.

■ मूल्य-१२५/- रु.

■ ISBN-978-81-941475-0-5



  
**DR. A. B. HUKADE**  
Co-ordinator,  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
**Arts & Commerce College**  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati



कला, साहित्य, भाषा, संस्कृती व जनसंवर्धनाचे विचारपीठ

# नभप्रकाशन

श्याम नगर, काँग्रेस नगर रोड, अमरावती. मो. ७७९८२०४५००, ८९७७८३८४००  
Email-nabhprakashan@gmail.com, Web-www.nabhprakashan.com

आ.क्र.-२२०

दिनांक - ०१/०१/२०२०

प्रति,

प्रा. डॉ. व्ही.एच. भटकर  
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख,  
कला व वाणिज्य महाविद्यालय,  
जरूड, जि.अमरावती.

नभ प्रकाशन ही आंतरराष्ट्रीय प्रकाशन संस्था असून गेल्या १५ जानेवारी २०१९ ला २४ वर्षे पूर्ण झाली आहे. आजपर्यंत नभ प्रकाशन संस्थेने साहित्य व शैक्षणिक २८०० पुस्तके प्रकाशित केलेली असून ३६० पुस्तकांना शासकीय, निमशासकीय संस्था, प्रतिष्ठान, सार्वजनिक वाचनालय, प्रकाशन संस्था आदिंचे पुरस्कार प्राप्त झालेली आहेत. तसेच अनेक पुस्तके विविध विद्यापिठांच्या अभ्यासक्रमात तसेच दहावी व बारावी बोर्डांच्या अभ्यासक्रमात समाविष्ट आहेत.

प्रा.डॉ. व्ही.एच. भटकर हे राज्यशास्त्र विषयाचे अभ्यासक आहेत. गत २४ वर्षांपासून विद्यादानाचे कार्य करीत आहे. त्यांची पुस्तके प्रकाशित करताना मला विशेष आनंद झाला.

प्रा.डॉ. व्ही.एच. भटकर, कला व वाणिज्य महाविद्यालय, जरूड यांची नभ प्रकाशन, अमरावती येथून तीन पुस्तके प्रकाशित झालेली आहेत.

१. भारतीय संविधानातील तरतुदी व स्थानिक स्वशासन

दि. १० ऑगस्ट २०१९ प्रकाशित झाले असून त्याचा ISBN - 978-81-941423-8-3 आहे.

२. निवडक राज्यघटना आणि आंतरराष्ट्रीय संबंध

दि. १ डिसेंबर २०१८ प्रकाशित झाले असून त्याचा ISBN - 978-81-905776-60-9 आहे.

३. चीनची शासनव्यवस्था (भारत - चीन संबंधासह) आणि संयुक्त राष्ट्रे

दि. १ डिसेंबर २०१८ प्रकाशित झाले असून त्याचा ISBN - 978-81-905776-49-6 आहे.

स्नेहांकित

मिलिंद डाहाके

मंचालक, नभप्रकाशन

श्याम नगर, अमरावती. पीन-४४४६०१  
म. ७७९८२०४५००, ८९७७८३८४००  
nabhprakashan@gmail.com



संत गाडगेबाबा अमरावती विद्यापीठ, अमरावतीच्या नवीन सत्र अभ्यासक्रमावर आधारीत  
बी.ए. भाग १ (राज्यशास्त्र) सत्र १ साठी

# भारतीय संविधानातील तरतुदी आणि स्थानिक स्वशासन



प्रा. डॉ. व्ही. एच. भटकर

प्रा. डॉ. प्रमोद तालन

प्रा. डॉ. पंकज नंदेश्वर

## निभप्रकाशन

DR. A. B. KUKADE  
Co-ordinator,  
IOAC  
Arts & Comm. College, Jarud



Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud Dist. Amravati



संत गाडगे बाबा अमरावती विद्यापीठ अंतर्गत बी.ए. भाग-१ सत्र-१ राज्यशास्त्राच्या  
निर्धारित अभ्यासक्रमावर आधारीत तसेच इतर विद्यापीठामधील राज्यशास्त्राच्या  
विद्यार्थ्यांकरीता व UPSC / MPSC, स्पर्धा परिक्षाकरीता उपयुक्त

# भारतीय संविधानातील तरतुदी आणि स्थानिक स्वशासन

प्रा.डॉ. व्ही.एच. भटकर


प्रा.डॉ. प्रमोद तालन

प्रा.डॉ. पंकज नंदेश्वर

## वभप्रकाशन

  
**DR. A. B. KUKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
**Arts & Commerce College**  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati



भारतीय संविधानातील तरतुदी  
आणि  
स्थानिक स्वशासन


- प्रकाशन क्र-२८९०
- प्रकाशन दिनांक  
१० ऑगस्ट २०१९
- © नभ प्रकाशन व  
प्रा. डॉ. व्ही. एच. भटकर  
“श्री” ४६-अ, पूर्वा टाऊनशिप, अर्जुन नगर  
ते शेगाव नाका रोड, अमरावती-४४४६०४  
मो. ९४२१७९०१०३, ७७९८०५८७५९.
- प्रकाशक  
मिलिंद डाहाके  
नभ प्रकाशन,  
श्याम नगर, काँग्रेस नगर रोड, अमरावती.  
मो.-७७९८२०४५००, ८१७७८३८४००  
Email-nabhprakashan@gmail.com  
Web-www.nabhprakashan.com
- मुखपृष्ठ संकल्पना  
राहुलकुमार
- अक्षर जुळवणी  
उमेश बावणकर
- मुद्रक  
‘नभ प्रिंटर्स’  
श्याम नगर, काँग्रेस नगर रोड, अमरावती.

■ मूल्य-९०/- रु.

ISBN- 978-81-941423-8-3

पुस्तक अधिकाधिक निर्दोष होण्यासाठी सूचना अपेक्षित

  
DR. A. S. KULKADE  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud

  
Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati  
Scanned with OKEN Scanner



Year 8 - 2020-21 Chapter in Book

# भारतीय विचारवंत

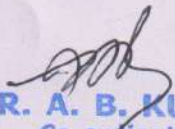


संपादक

डॉ. नीलम छंगाणी



डॉ. नितीन चौधरी

  
**DR. A. B. KULKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud

  
Principal  
**Arts & Commerce College**  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati



भारतीय विचारवंत : डॉ. नीलम छंगाणी, डॉ. नितीन चौधरी  
प्रकाशक :

अॅड. कु. जे. व्हि. भगत  
अजिंक्य प्रकाशन  
भिमनगर, वापटा पो. कुपटा  
ता. मानोरा जि. वाशिम

संपर्क : ९६०४४०२०५३

WhatsApp : 8007143527

Website : [www.ajinkyapublication.com](http://www.ajinkyapublication.com)

E-mail : [ajinkyapublication@gmail.com](mailto:ajinkyapublication@gmail.com)

**ISBN :978-93-90532-20-9**

© लेखकाधिन

प्रथम आवृत्ती : जानेवारी २०२१

अक्षर जुळवणी : अजिंक्य प्रिंटींग्स् अॅण्ड कॉम्प्यूटर्स

मुखपृष्ठ : अरविंद मनवर

मुद्रक : अजिंक्य एन्टरप्राईजेस, वाशीम

प्रमुख विक्रेता: अजिंक्य पुस्तकालय, वाशिम

संपर्क : ८००७१४३५२७ / ९६०४४०२०५३

किंमत : रु.४५० फक्त

(या पुस्तकात व्यक्त झालेल्या मतांशी प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही.)



✓ ६२.	स्वतंत्र भारताचे दुसरे पंतप्रधान लाल बहादूर शास्त्री / डॉ. व्ही. एच. भटकर	३०२
६३.	संत कबिरकें नारीसंबंधी विचार / डॉ. जितेंद्र शेळके	३०६
६४.	हिन्दी साहित्य का छायावाद व गांधी विचार धारा / डॉ. सुरेश केसवानी	३११
६५.	प्रेमचंद कि कहानियाँ / डॉ. विजयकुमार कल्लूरकर	३१६
६६.	संत तुलसीदास के साहित्य में सामाजिक चेतना / डॉ. निभा उपाध्याय	३२१
६७.	Dhyan Chand – The Magician in the world of Hockey / Prof. Anjali Barde	३२५
६८.	Buddha : A Philosopher of Emancipator of mankind / Dr. S.M. Bhowate	३२९
६९.	Mahatma Gandhi View on Indian Writers / Prof. Rupesh Wankhade	३३५
७०.	Scientists : Venkatraman "Venki" Ramakrishnan / Prof. Chhaya Badnakhe	३४१
७१.	A Great Thinker Vallabhacharya's Contribution to Music / Dr. Ajaykumar Solanke	३४५
७२.	Aborigonal's Social Education and Gandhi's Educational Philosophy / Prof. Manisha Kirtane	३५०
● ७३.	Kamala Das as a Confessional Poet / Dr. Nilima Tidke	३५३
७४.	Dr. Coluthur Gopalan : The Champion of India's Public Health Programme / Prof. Pavan Mahajan	३५९
७५.	S R Ranganathan's Five Law's in Library Science / Dr. Sandhipan Mundhe	३६५
७६.	Sri Aurobindo : Yogi of Spirtual Technology / Dr. Shalini Bang	३७०



## स्वतंत्र भारताचे दुसरे पंतप्रधान लाल बहादूर शास्त्री

प्रा. डॉ. व्ही. एच. भटकर

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख,

कला व वाणिज्य महाविद्यालय, जरुड, जि. अमरावती

### प्रारंभीक जीवन

स्वतंत्र भारताचे दुसरे पंतप्रधान लाल बहादूर शास्त्री यांचा जन्म २ ऑक्टोबर १९०४ रोजी उत्तरप्रदेशातील वारणसीपासून सात मैल दूर मुघलसराई या लहान रेल्वे गावात झाला. बालपणी सर्व त्यांना घन्हेड म्हणून हाक मारीत होते. भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील निष्ठवान कार्यकर्ते, थोर राष्ट्रभक्त आणि भारताचे आणि भारताचे दुसरे पंतप्रधान असणाऱ्या लाल बहादूर शास्त्रींनी आपल्या साध्या व्यक्तीमत्त्वाने राजकीय क्षेत्रात एक वलय निर्माण केले. त्यांचे आडनाव श्रीवास्तव, पण त्यांनी या आडनावाचा व्यवहारात कधीही उपयोग केल्याचे आढळत नाही. त्यांचा जन्म बनारस जवळील मोगलसराई या रेल्वे वसाहतीत शारदाप्रसाद व रामदुलरिदेवी या दांपत्याच्या पोटी सामान्य कायस्थ कुटुंबात झाला. वडील शारदाप्रसाद सुरुवातीस प्राथमिक शिक्षक होते, पुढे ते शासकीय लिपिक झाले. आई पारंपारिक धार्मिक वृत्तीच्या होत्या. लाल बहादूर दीड वर्षांचे असताना वडील वारले. तेव्हा हे कुटुंब बनारसजवळ रामनगरला स्थायिक झाले.

हरिश्चंद्र हायस्कूलमध्ये ते मॅट्रिकला असताना म. गांधींनी असहकाराची चळवळ सुरु केली. शास्त्रींनी शाळा सोडली व म. गांधींच्या विचारसरणीकडे ते आकृष्ट झाले. पुढे त्यांना महात्मा गांधींचा सहवास लाभला व ते पूर्णतः गांधीवादी बनले. त्यांनी महत् कष्टाने काशी विद्यापीठातून तत्त्वज्ञान या विषयात पहिल्या वर्गात शास्त्री ही पदवी मिळविली. विद्यार्थीदशेत डॉ. भगवादास, गोपालशास्त्री या अध्यापकांचा आणि नंतर पुरुषोत्तमदास टंडन व लाला लजपत राय यांच्या त्यांच्यावर प्रभाव पडला. लाला लजपत राय यांनंतर स्थापिलेल्या सर्व्हंट्स ऑफ द पीपल या संस्थेचे ते १९२५-२६ मध्ये आजीव सेवक झाले आणि अलाहाबादेत त्यांनी कायमचे वास्तव्य केले. मिर्झापूर येथील ललितादेवीशी त्यांचा १९२७ मध्ये विवाह झाला. त्यांना चार मुलगे व दोन मुली झाल्या. त्यांचे दोन मुलगे सक्रिय राजकारणात आले. पत्नी ललितादेवी धार्मिक वृत्तीच्या असून उपासना व पतीची सेवा यात मग्न असत. लाल बहादूर शास्त्री यांना परकीयांच्या गुलामीमधून देशाला मुक्त करण्याच्या लढ्यात रुची निर्माण झाली. भारतात ब्रिटीश राजवटीला पाठिंबा देणाऱ्या भारतीय राजांची महात्मा गांधी यांनी केलेल्या निंदेमुळे ते अत्यंत प्रभावीत झाले. त्यावेही लाल बहादूर शास्त्री केवळ ११ वर्षांचे होते, आणि तेव्हापासून राष्ट्रीय स्तरावर काहीतरी करण्याबाबतची प्रक्रिया त्यांच्या मनात घोळू लागली.



व प्रवास

गांधीजींनी देशवासीयांना असहकार चळवळीत सहभागी होण्याचे आवाहन केले, लाल बहादूर शास्त्री सोळा वर्षांचे होते. गांधीजींच्या आवाहानाला प्रतिसाद म्हणून शिक्षण देण्याचा विचार एकदा त्यांना केला त्यांच्या या निर्णयामुळे त्यांच्या आईच्या आशांना हादरा बसला, परंतु लाल बहादूर यांचा निर्णय ठाम होता. कारण बाहेरून मृदू वाटणारे आतून एखाद्या खडकासारखे कणखर होते. ब्रिटीश राजवटीच्या विरोधात स्थापन करण्यात या अनेक राष्ट्रीय संस्थांपैकी एक वाराणसीतील काशी विद्यापीठात ते सामील झाले येथे महान विद्वान आणि देशभक्तीचा त्यांच्या व्यक्तीमत्त्वावर प्रभाव पडला. विद्यापीठाने त्यांना पदवीचे नाव घशास्त्रीड होते. मात्र लोकांच्या मनात त्यांच्या नावाचा एक भाग म्हणून हे नाव कोरले गेले.

ही दिवस मुझफरपूर येथे त्यांनी हरिजनोद्वाराचे कार्य केले. अलाहाबादला नेहरूंचे सहवास त्यांना लाभला. त्यांनी सामाजिक क्षेत्रातील संघटनांतून बहुविध पदांवर केले. त्यांत प्रयाग नगरपालिकेचे सदस्य (१९८२८-३५) उत्तर प्रदेश विधान सभेचे सदस्य, श्री बोर्डाचे सचिव (१९३७), भूमि सुधार समितीचे चिटणीस (१९३५-३६), जिल्हाचे चिटणीस (१९३००-३५), प्रांतिक काँग्रेसचे चिटणीस (१९३७), अ.भा.काँ. रिणीचे सदस्य व महासचिव इ. पदे भूषविली. स्वातंत्र्य चळवळीत त्यांना सात वेळा होऊन नऊ वर्षे कारावास भोगावा लागला. १९४२ च्या चळवळीत भूमीगत राहून त्यांनी केले. पण पुढे त्यांना अटक झाली. तुरुंगात त्यांनी कांट, हेगेल, रसेल, हक्सली इ. तांच्या ग्रंथांचे परिशीलन केले. मादाम क्यूरीच्या चरित्राचे त्यांनी हिंदीत भाषांतर केले. काही स्फुटलेख अप्रकाशित राहिले आहेत.. त्यांनी काही महिने उत्तर प्रदेशाच्या नएट बोर्डावर तसेच हिंदी समितीचे संयोजक म्हणूनही काय केले.

उत्तर प्रदेश विधान सभेवर ते काँग्रेसतर्फे १९४६ मध्ये निवडून आले. गोविंद पंतांच्या काळात त्यांच्याकडे गृह आणि दळणवळण खाते देण्यात आले. पंडित नेहरूंनी त्यांना अ. काँग्रेसचे महासचिव केले. भारताच्या पहिल्या सार्वत्रिक निवडणुकीत त्यांनी काँग्रेस यांच्या निवडीचे कठीण काम केले. त्यांची समन्वयवादी वृत्ती व संघटन कौशल्य लक्षात पंडित नेहरूंनी त्यांना राज्यसभेचे सभासद करून केंद्रीय मंत्रिमंडळात रेल्वे आणि वाहतूक मंत्री केले. त्यांनी विसःया वर्गाच्या उतरुंसाठी अनेक सुखसोयी उपलब्ध करून देऊन शिवर मोठा पूल बांधला प. बंगालमध्ये चित्तरंजन कारखान्याची उभारणी केली. यावेळी ये घडलेल्या अरियालूरच्या भीषण रेल्वे अपघाताची नैतिक जबाबदारी स्वीकारून त्यांनी त्रिपदाचा राजीनामा दिला आणि आदर्श घालून दिला. त्यांनतर ते १९५७ मध्ये पुन्हा सभेवर निवडून आले. त्यांना पुन्हा केंद्रीय मंत्रिमंडळात घेतले. १९५७ ते १९६४ दरम्यान संचार व परिवहन, उद्योग व व्यापार, गृह इ. खाती समर्थपणे सांभाळली, विशेषतः पदाच्या काळात पंजाबी सुभ्याची चळवळ, दक्षिणेतील हिंदी विरोधी चळवळ, जम्मू



काश्मीरमधील धार्मिक तणाव यांसारख्या समस्यांना त्यांना तोंड द्यावे लागले. लाचलुचपत आणि भ्रष्टाचार यांना आळा घालण्यासाठी त्यांनी संथानम् आयोगाची नेमणूक केली. त्यांनी विशाखपट्टनम् येथे जहाजबांधणी कारखान्याची उभारणी केली, रशिया व चेकोस्लोव्हाकिया यांच्या सहकार्याने अवजड अभियांत्रिकी निगम स्थापन केला आणि चाहीस परकीय संस्थांशी व्यापारी करार केले. आसामची भाषिक दंगल (१९६०-६१), पंजाबची धार्मिक दंगल आणि मास्टर तारासिंगांची पंजाबी सुभ्याची चळवळ हे प्रादेशिक प्रश्न त्यांनी अत्यंत कौशल्याने व कणखर भूमिका घेऊन हाताळले. द्रविड मुन्नेत्र कळघमच्या स्वतंत्र द्रविडस्थानत्त्या मागणीचा त्यांनी इन्कार केला आणि भारतीय संघातून बाहेर पडणाऱ्या प्रचारयंत्रणेस राष्ट्रद्रोही ठरवून तसे विधेयक संसदेत संमत करवून घेतले. तसेच केंद्रीय प्रशासनातील दप्तर दिरंगाईवर कडक उपाययोजना केली.

जवाहरलाल नेहरुंनी प्रशासनाच्या शुध्दीकरणासाठी कामराज योजना अंमलात आणून डोईजड सहाकाऱ्यांना राजीनाम्याचे आवाहन केले. कामराज योजनेनुसार शास्त्रीसह सहा मंत्र्यांची राजीनामे दिले. शास्त्रींनी काँग्रेस संघटनेच्या कामास वाहून घेतले. पण पंडितजींनी पुन्हा त्यांना बिनखात्याचे मंत्री म्हणून घेतले. पंडित नेहरुंच्या निधनानंतर (२७ मे १९६४) काँग्रेसच्या संसदीय सभेने ९ जून १९६४ रोजी शास्त्रींची पंतप्रधान म्हणून एकमताने निवड केली. नंतर लगेचच त्यांनी पंजाबचे प्रतापसिंह कैरॉ यांच्यावरील भ्रष्टाचाराच्या आरोपांची चौकशी करण्यासाठी दास कमिशन नियुक्त केले. भ्रष्टाचाराच्या प्रकरणी बदनाम झालेले ओरिसाचे वीरेन मित्र आणि बिजू पटनाईक यांना राजीनामा द्यावयास भाग पाडले. तसेच केरळातील अस्थिर वातावरण पाहून तिथे राष्ट्रपती राजवट आणली.

भारताचे शांतता आणि अलिप्तता या तत्त्वांवर आधारित परराष्ट्रधोरण पुढे चालू ठेवले. श्रीलंका, भूतान, नेपाळ यांसारख्या शेजारी देशांमध्ये विश्वास निर्माण करून त्यांच्याशी असलेली मैत्री दृढ करण्यावर भर दिला. भारत श्रीलंका यांत करार करून सु. चार लाख भारतीय तमिळना श्रीलंकेचे नागरिकत्व मिळवून दिले. शेख अब्दुल्लांना त्यांच्या राष्ट्राविरोधी वृत्त्यांमुळे स्थानबद्ध केले. त्याच प्रमाणे नेहरुंचे औद्योगिक प्रगतीचे धोरणही त्यांनी पुढे चालू ठेवले.

त्यांच्या कारकीर्दीतील भारत पाक युध्द ही सर्वांत कसोटीची घटना होय. ती त्यांनी अत्यंत खंबीरपणे व कार्यक्षमपणे हाताळली. पाकिस्तानकडूनच १२ एप्रिल १९६५ रोजी कांजरकोट येथे कच्छ सरहद्दीवर प्रथम छाड बेटावर आक्रमण झाले, तेव्हा शास्त्रीजींनी प्रतिकाराची घोषणा केली आणि मॉस्को येथे कोसिजिन आणि मिकोयान यांच्याशी तत्संबंधी सविस्तर चर्चा केली. याचवेळी त्यांनी जिनीव्हा करारानुसार व्हिएटनामी युध्द अमेरिकेले तत्काळ थांबवावे, अशी जोरदार मागणी केली आणि अमेरिकेने दिलेले भेटीचे निमंत्रण पुढे ढकलताच, माझा दौराच रद्द करा असे स्पष्ट कळविले. त्यांनंतर काही दिवसांनी १४ ऑगस्ट १९६५ रोजी पाकिस्तानने सियालकोट येथे युध्दबंदीरेषा ओलांडून अतिक्रमण केले.



तेव्हा भारतानेही स्थिवाल युध्दबंदीरेषा ओलांडून हाजीपीर जिकले आणि लाहोरच्या भारतीय फौजा घुसल्या. पाक आक्रमणाला प्रतिआक्रमणाने उत्तर देऊन त्यांनी इतिहासात प्रथमच आक्रमक शत्रूच्या प्रदेशांत घुसून लढाई करण्याचा मान मिळविला. त्यांनी जनतेला सहकार्याचे आवाहन केले. सियालकोट, जम्मू, आदमपूर, जोधपूर तसेच त्यांनी प्रत्यक्ष भेट दिली व जेव्हा चीनने युध्दाची धमकी दिली तेव्हा दोन्ही लढ्यांवर लढण्यास भारत सज्ज असल्याची आत्मविश्वासपूर्वक घोषणा केली. संयुक्त राष्ट्र संघने युध्दविरामाची विनंती करतात एकतर्फी युध्द थांबवून वाटाघाटीस तयारी दर्शविली.

भारत पाक यांत रशियाच्या मध्यस्थीने ताश्कंदला वाटाघाटी होऊन नऊ कलमी करारावर आयुबखान व शास्त्री यांच्या १० जानेवारी १९६६ रोजी सह्या झाल्या. त्या कराराचे हृदयविकाराने निधन झाले. लाल बहादूराने कधी कुणाची नोकरी अशी केली नाही, अनेक सामाजिक सेवाभावी संस्थांत विनावेतन किंवा गरजेपुरता अल्प मोबदला घेऊन काम केले. त्यामुळे अखेरपर्यंत त्यांना दारिद्र्याशी झगडावे लागले. त्यांचा मूळ पिंड शांततावादी असेवकाचा होता. संघटन कौशल्य हा त्यांचा स्थायी भाव होता.

उजवे व डावे त्यांच्या समन्वयवादी भूमिकेमुळे विधायक कार्यासाठी एकत्र येत. साधी, उच्च विचारसरणी, सतशील व निरिच्छ वृत्ती आणि स्पष्टवक्तेपणा यांमुळे अनेकांचा विश्वास संपादिला. भारत पाक युध्दाच्या वेळी त्यांच्या राष्ट्रीय अस्मितेचे आणि कणखर भावे दर्शन जगाला घडले. त्यांची जवान, जय किसान ही अर्थपूर्ण घोषणा पुढे अमर झाली. सचं माजी अध्यक्ष व थोर देशभक्त पुरुषोत्तमदास टंडन यांनी त्यांच्या कार्याचे मूल्यमापन शब्दात केले आहे. मूल्यमापन करणे, अडचणीतून मार्ग काढणे व समेट घडवून आणणे शास्त्रीजींचा हातखंडा आहे. या गोष्टी ते मृदुतेने पार पाडीत, पण त्यांच्या या मार्दवामागे त्यांचा पहाड उभा आहे, हे विसरुन चालणार नाही. भारत सरकारने भारतरत्न हा पुरस्कार त्यांचा मरणोत्तर सन्मान केला. त्यांच्या स्मरणार्थ तामिळनाडू राज्यात संस्कृत विद्यापीठ स्थापन करण्यात आले आहे.

1. Brecher, Michael, Succession in India, London, 1965.  
2. Gujrati, B. S. Ed. A Study of Lal Bahadur Shastri, Delhi, 1966.  
3. Mankekar, D. R. Lal Bahadur Shastri : A Political Biography, Bombay, 1965.  
4. शत्रे, प्र. के. भावे, विनायक, इतका लहान, एवढा महान, मुंबई, १९६६.  
5. शत्रे, प्र. के. भावे, आपले पंतप्रधान : लालबहादूर शास्त्री, पुणे, १९६५.  
6. शत्रे, प्र. के. भावे, लालबहादूर शास्त्री, पुणे, १९६७.

भारतीय विचारवंत / ३०५

DR. A. B. KURADE  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College

Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati



ISBN - 978-93-89478-20-4

# भारतीय समाजसुधारक (ई-बुक)

(Bharatiy Samajsudharak, e-book)



संपादक

प्रा. डॉ. कृष्णा आ. माहुरे

सहसंपादक

प्रा. डॉ. सचिन ज. होले

**AADHAR INTERNATIONAL PUBLICATIONS**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the editor & co-editor

**DR. A. B. KUKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud





ISBN - 978-93-89478-20-4

**भारतीय समाजसुधारक**  
(ई-बुक)

(Bharatiy Samajsudharak, e-book)

संपादक

**प्रा. डॉ. कृष्णा आ. माहुरे**

एम.ए. (राज्यशास्त्र) नेट, पीएच.डी., डी.सी.जे.

सहसंपादक


**प्रा. डॉ. सचिन ज. होले**

एम.ए. (समाजशास्त्र) सेट, पीच.डी.

**AADHAR INTERNATIONAL PUBLICATIONS**

For Details Visit To : [www.aadharsocial.com](http://www.aadharsocial.com)

© All rights reserved with the editor & co-editor

  
**DR. A. B. KULKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
प्राचार्य  
बस्ता व वाणिज्य महाविद्यालय  
जरुड, ता. जरुड, जि. अमरावती



ISBN - 978-93-89478-20-4

- ◆ ई- बुक प्रकाशन  
ISBN - 978-93-89478-20-4
- ◆ भारतीय समाजसुधारक (ई-बुक )  
(Bharatiy Samajsudharak, e-book)
- ◆ प्रकाशक  
आधार प्रकाशन अमरावती, ४४४६०४.  
मोबाइल नं. ९५९५५६०२७८
- ◆ प्रथमावृत्ती (ई-प्रकाशन)  
२६ जून २०२०, छत्रपती शाहू महाराज जयंती  
( सामाजिक न्याय दिन )
- ◆ संपादक  
प्रा. डॉ. कृष्णा आ. माहुरे  
फ्लॉट नं. एस-५, कृष्णा हाइट्स, अकोला रोड अकोट.  
मोबाइल नं. ९४२३६१४११२
- ◆ सहसंपादक  
प्रा. डॉ. सचिन ज. होले  
प्रफुल्ल कॉलनी, साईनगर अमरावती.  
मोबाइल नं. ९४२१७४१२४५
- ◆ किंमत : १००/-

  
**DR. A. B. KUKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
**Arts & Commerce College**  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati



# भारतीय समाजसुधारक

(ई-बुक)

(Bharatiy Samajsudharak, e-book)

## अनुक्रमणिका

अ. क्र.	लेख व लेखकांचे नाव	पान. नं.
१.	महात्मा ज्योतिराव फुले आणि शेतकरी चळवळ - प्रा.डॉ. विनोद खैरे	०१ - ०८
२.	सामाजिक- राजकीय सुधारणा आंदोलनातील राजा राममोहन रॉय यांचे योगदान - प्रा. डॉ. योगेश दा. उगले	०९ - १३
३.	अस्पृशोद्धारक चळवळीचा नायक - प्रा.डॉ.कृष्णा आ. माहुरे	१४ - १७
४.	डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांची सामाजिक भूमिका - प्रा. एम.पी.चोपडे	१८ - २१
५.	मोहनदास करमचंद गांधी : रामराज्याची संकल्पना - डॉ. संगीता एस.भुयार	२२ - २७
६.	प्रेरणादीप स्वामी विवेकानंद - डॉ. सौ. विभा प्र. देशपांडे	२८ - ३१
७.	महात्मा फुले : आद्यसमाजसुधारक - प्रा. डॉ. सचिन ज. होले	३२ - ३५
८.	राजाराम मोहन राय - डॉ. ए. डी. जाधव	३६ - ३९
९.	डॉ.अभय व राणी बंग दाम्पत्य - प्राचार्य, डॉ. धर्मेद्र तेलगोटे	४० - ४१
१०.	आत्मनिर्भरतेचे प्रतिक : बाबांचे आनंदवन - प्रा.डॉ. प्रशांत विधे	४२ - ४३
११.	क्रांतिवीर उलगुलान बिरसा मुंडा - प्रा. डॉ. राम कुलसंगे	४४ - ४७
१२.	अण्णाभाऊ साठे यांचे जीवन कार्य व राजकीय विचार - प्रा. बी. बी. जाधव	४८ - ५१
१३.	ताराबाई शिंदे - प्रा. स्मिता साठवणे	५२ - ५५
१४.	डॉ. पंजाबराव देशमुख यांचे कृषिविषयक कार्य - वर्षा बा. वाकोडे	५६ - ५८
१५.	स्त्री शिक्षणाच्या अग्रदूत: सावित्रीबाई फुले - पल्लवी पवार	५९ - ६१
१६.	समाजसुधारिका- बहिणाबाई चौधरी - सचिन शिवनारायण मौर्य	६२ - ६३





## क्रांतिवीर उलगुलान बिरसा मुंडा

प्रा. डॉ. राम कुलसंगे

कला आणि वाणिज्य महाविद्यालय, जरुड जि.अमरावती

बिरसा मुंडा जन्म १५ नोव्हेंबर १८७५ साली झाला. आईचे नाव सगुना मुंडा वडीलाचे नाव करमी हातू मुंडा. जन्मगाव मिराची. जन्म स्थळ खुंटी झारखंड. भगवान बिरसा मुंडा यांना विविध प्रकारच्या उपाध्या प्राप्त झाल्या. क्रांतीसुर्य, धरती अबा, भगवान, महामानव, क्रांतिवीर अशा वेगवेगळ्या प्रकारच्या उपाध्या उलगुलान बिरसा मुंडा यांना प्राप्त झाल्या. उलगुलान बिरसा मुंडा यांची स्मृती स्थळे झारखंड येथे उपलब्ध आहेत. बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार राची, बिरसा मुंडा हवाई अड्डा, बिरसा मुंडा समाधीस्थळ अश्या वेगवेगळ्या रूपांमध्ये स्मृतिस्थळ याची उभारणी झारखंड येथे झालेली आहे. भारतभर बिरसा मुंडा हे आदिवासी समाजातील एक मोठं दैवत म्हणून समजल्या जाते.

बिरसा मुंडा इंग्रजांच्या विरोधामध्ये वेगवेगळ्या प्रकारची विद्रोही आंदोलने केली एक युवा नेतृत्व म्हणून पहिले संथाल विद्रोह, कोल विद्रोह, गोंड विद्रोह, खासी विद्रोह, मानगढ चा विद्रोह, अशा वेगवेगळ्या प्रकारची इंग्रजांच्या विरोधामध्ये स त्याकरिता आणि अन्यायाच्या विरोधात सामान्य माणसांना न्याय मिळविण्याकरिता विभिन्न प्रकारची आंदोलने केली आहेत.

### आदिवासी जननायक बिरसा मुंडा :

विसाव्या शतकातील बिरसा मुंडा हे एक आदिवासी जननायक म्हणून प्रसिद्ध आहेत. त्यांच्या नेतृत्वात अन्यायाच्या विरोधात इंग्रजांना सामना देण्याकरिता बिरसा मुंडा यांनी वेगवेगळी महान आंदोलने केली. उलगुलानचा नारा दिला गेला. उलगुलान हा अन्यायाच्या विरोधात वापरला जाणारा एक महत्त्वपूर्ण शब्द आहे. बिरसा मुंडा यांना आजही भारतभर आदिवासी समाजामध्ये भगवान यांच्या रूपांमध्ये पूजन केले जात आहे.

### बिरसा मुंडा यांचे प्रारंभिक जीवन :

सगुना मुंडा आणि कर्मी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा यांचा जन्म १५ नोव्हेंबर १८७५ साली झारखंड या प्रदेशात राची मधील उलीहातू या गावात झाला. गावामध्ये बिरसा मुंडा यांचे प्राथमिक शिक्षण झाले. पुढे चाईबासा इंग्लिश मीडियम स्कूल मध्ये शिकायच होते, परंतु त्यांचा मन आणि इच्छा समाजाला न्याय मिळवून देण्याकरिता प्रगल्भ भावना असल्याकारणाने आणि अतुट शिक्षणाची इच्छा असल्याने चाईबासा इंग्लिश मीडल स्कूल मध्ये शिकायला गेले. आपल्या समाजावर सतत अन्याय करणाऱ्या ब्रिटिश शासकांची



शासनाची वाईट नजर आणि त्यांनी केलेल्या अन्याय-अत्याचार हे पहावत नव्हतं. त्यांनी सर्व मुंडा लोक आणि आपला समाज इंग्रजाकडून मुक्तीकरिता आपलं नेतृत्व प्रदान करून आंदोलनाची सुरुवात करायला लागले. कॉलेज स्कूल वादविवाद यामध्ये हमेशा प्रगल्भता दाखवून ते आदिवासी समाजाकरिता जल, जंगल, जमीन यावर आपला हक्क आहे. आम्ही या धरतीची लेक्रे आहोत. आम्ही या पृथ्वीवरची मूलनिवासी आहोत, आमचा हक्क आम्हाला मिळाला पाहिजे अशी बिरसा मुंडा यांची भावना नेहमी असायची. इंग्रज कालखंडातील काही अधिकारी जेलर आणि इतर लोक यांनी या आदीम समाजाला आपल्या वेगवेगळ्या प्रकारच्या समस्यांनी त्रासून सोडले होते. इंग्रज आणि मिशनरी यातील काही ही अधिकारीवर्ग हे लालच दाखवून धर्म स्वीकारण्याचा करिता भाग पाडत होते. इच्छा नसतानाही त्यांच्या काही धर्मातराच्या बाबी स्वीकाराव्या लागत होत्या. या अन्यायाच्या विरोधात बिरसा मुंडा यांनी आपल्या आंदोलनाच्या भूमिकेला सुरुवात केली. इंग्रज आणि त्यांची काही अधिकारी ही आदिवासी समाजाच्या जमिनी हडपून आपला हक्क बजावीत होते. आदिवासी समाजावर हा होणारा अन्याय अत्याचार बिरसा मुंडा यांना सहन होत नव्हता.

१८८६-८७ साली सरदार मुंडा जन्म भूमी वापसी आंदोलन केले. तेव्हा त्या आंदोलनाला ईसाइ ख्रिश्चन मीशनरी याद्वारे विरोध करून आंदोलन दाबल्या गेले. तेव्हा बिरसा मुंडा यांना मोठा आघात झाला. त्यांची ही बळजबरी पाहून आणि अन्यायाच्या विरोधात लढाऊवृत्ती पाहून त्यांना शाळेमधून काढून टाकण्यात आले. तेव्हा बिरसा मुंडा यांनी कुठलीही नाराजी व्यक्त न करता समाजावरील अन्याय अत्याचार पाहवत नव्हता, तरीही त्यांनी इच्छा आंदोलनासंदर्भात सोडली नाही. १८९० साली बिरसा आणि त्यांचे वडील चाईबासा मधून वापस आले. १८८५-१८९० या वर्षापर्यंत बिरसा चाईबासा या मिशन शिक्षण संस्थेत राहण्यासाठी पूर्ण विचार केला होता, परंतु समाजातील अन्य अत्याचार इंग्रजांचा मुजोरपणा सहन होत नसल्या कारणाने त्यांच्या मनात एक क्रांतीची भावना निर्माण झाली. एक स्वाभिमान निर्माण झाला होता. तेव्हा बिरसा मुंडा संधाल विद्रोह, आंदोलन, कोल आंदोलन, यांचा प्रभाव व्यापक प्रमाणात बीरसावर पडला. तेव्हा आपल्या समाजाची दूरदरश्या, अवहेलना, अन्याय व त्यांच्या आणि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, अस्मिता फार मोठ्या धोक्यामध्ये आलेली होती. तेव्हा त्यांच्या मनात एक विशाल अशा क्रांतीची भावना निर्माण झाली. बिरसा मुंडा यांनी मनामध्ये एक मोठा संकल्प करून इंग्रज शासन आणि प्रशासनाच्या विरोधात आपल्या समाजामध्ये जनजागृती करण्याचा निर्णय घेतला. आदीम समाजावर कोणत्याही प्रकारचा अन्याय अत्याचार होणार नाही, असा एक संकल्प तयार करून आपल्या अन्यायाविरुद्धाची भावना निर्गमित केली. १८९४ च्या मान्सूनमध्ये छोटानागपूरात भयंकर अकाल, असफलता महामारी निर्माण झाली. तेव्हा आपली नाराजी व्यक्त करून अन्यायाच्या विरोधात आणि आपल्या आदिवासी समाजाची सेवा करणे



लोकांची सेवा करणे हेच आपला कर्तव्य आहे असं समजल्या जात होते.

### बिरसाइट धर्माची स्थापना :

महात्मा गांधी यांच्या पूर्वीच्या नेतृत्वाच्या अवधारणेनुसार बिरसा आणि समाज अनुयायी, सैनिक सुकक्ष्म अवलोकन करून आपल्या अंतर्दृष्टी मधून त्यांनी कशा सोडवील्या जातील, समान समस्या पाहून आपल्या समाजाविषयी चिंतन करून आपला समाज संघटित करण्याचा फार मोठा प्रयत्न केला. इंग्रजां पासून इंग्रजांच्या तावडीला आता तोड म्हणून एक पर्याय निर्माण केला. दिर बीरसाइट धर्माची स्थापना करण्याचा फार मोठा निर्णय घेतला, ज्याचा संबंध संपूर्ण बिरसा ही धर्म म्हणून मुंडा जमातीवर अनुशासित होता. ज्यांचा आधार सात्विकता अध्यात्मिकता परस्पर सहयोग एकता आणि बंधुत्व होता. जी काही इंग्रज लालसेपोटी बिरसा मुंडा जमातीच्या लोकांना धर्मांतरण करण्यासाठी प्रवृत्त करत तेव्हा त्या लोकांकरिता गोरे लोक वापस जावो असा एक नारा दिला गेला. परंपरागत एक लोकतंत्राची स्थापना करून मुंडा जमातीला मोठा आधार दिला गेला. आदिवासी समाज शोषणमुक्त राहावं यासाठी साम्यवादाची स्थापना करून हम सब एक है असा नारा दिला. महाराणी राज, इंग्रज राज, निघून जाईल आणि आमचे गाव आमचे राज्य, आमचे गाव आमचे सरकार, अशा घोषणा दिल्या. **मुंडा विद्रोहाचा नेतृत्व :**

बिरसा मुंडा यांनी १ आक्टोबर १८९४ साली नेतृत्वाच्या रूपात सर्व मुंडा जमातींना एकत्र करून इंग्रजांकडून संपूर्ण लगान माफ करण्याचा मोठा निर्णय घेऊन आंदोलन केले. १८९५ मध्ये स्वतः इंग्रजांच्या विरोधात लगान करीता केलेल्या आंदोलनासाठी इंग्रजांनी बिरसा मुंडा यांना अटक केली. हजारीबाग केंद्रीय कामगार या जेलमध्ये दोन वर्षांची कारावासाची शिक्षा देखील झाली. तरीही क्रांतिवीर बिरसा मुंडा आणि त्यांची सर्व शिष्य व अनुयायी ही आपला क्षेत्र न सोडता बिरसा मुंडा यांना सहाय्यता करण्याचा संपूर्ण योगदान दिले. बिरसा मुंडा आपले जीवन संपूर्ण समाजासाठी समर्पित केले. आजही आदिवासी समाजातील लोक बिरसा मुंडा यांना महापुरुष महामानव भगवान असं दर्जा दिला जातो. बिरसा मुंडा यांनी आपल्या परिसरामध्ये धरती अबा उलगुलान भगवान क्रांतिकारी अशा नामो लिखित शब्दांनी ओळखले जाते. बिरसा मुंडा यांचा प्रभाव आणि वाढती गुरुजी यांच्या परिसरामध्ये फार मोठी संघटित होण्याची चेतना आणि ताकद निर्माण केल्या गेली, हे बिरसा मुंडा यांच्या नेतृत्वात फार मोठे योगदान आहे.

### विद्रोही भागीदारी :

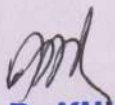
बिरसा मुंडा यांचा विद्रोहामध्ये फार मोठा सिंहाचा वाटा आहे. १८९७ ते १८९८ या साली मुंडा जमात यांच्या नेतृत्वात आणि इंग्रज अधिकारी आणि शिफा यांमध्ये फार मोठे युद्ध झाले. तेव्हा मालिका बिरसा आणि त्यांचे संपूर्ण अनुयायी त्यांना महत्त्व देणारे शिष्य इंग्रजांच्या



विरोधात फार मोठा दबाव आणुन इंग्रज भगाव असा एक मोठा नारा दिला गेला. आगस्ट १८९७ मध्ये बिरसा आणि त्यांची काही सहकारी एकत्रित येऊन खुलती ठाणे या इंग्रजांच्या ठाण्यावर हल्ला केला. १८९८ मध्ये तागा नदीच्या किनाऱ्यावर इंग्रज सेनेच्या विरोधात मोठा हल्ला करून इंग्रजांना पळवले. परंतु काही इंग्रजांच्या मोठ्या अधिकाऱ्यांनी बिरसा यांच्यावर सशस्त्र हल्ला करून काही सैनिक व बिरसा अनुयायी आणि बिरसा मुखिया यांना अटक केली. तरीही बिरसा विद्रोही आंदोलनाकरिता मागे राहिले नाही तर आंदोलनाची सुरुवात सुरूच ठेवली.

बिरसा मुंडा यांच्यावर वेगवेगळ्या प्रकारच्या केसेस लावून खटले चालविले गेले. जेलमध्ये असतानाच त्यांची प्रकृती खराब होत गेली. १ जून १९०० रोजी दवाखान्याचे चिकित्सक यांनी सूचना दिली की, बिरसा ची प्रकृती फार बिघडत आहे, ते जिवंत राहतील याची काही शक्यता नाही. तेव्हा सर्व अनुयायी जेलच्या बाहेर असताना बिरसा चे नारे देत असताना. ९ जून १९०० रोजी सकाळी सूचना देण्यात आली की, बिरसा जीवित नाही त्यांचा मृत्यू झालेला आहे. बिरसा यांचे संघर्ष रुपाने परिणामस्वरूप छोटानागपूर सहकारी अधिनियम १९०८ साली जल, जंगल आणि जमीन वर पारंपरिक अधिकार यांची सुरक्षा आणि सुरू केलेले आंदोलन एका पाठीमागून एक अशी शृंखला गतिमान झाली. परिणामी झारखंड राज्य निर्माण झाले. झारखंड राज्याला एक मोठा इतिहास आहे. स्वातंत्र्याच्यानंतर देखील औद्योगीकरण आणि सामाजिक आर्थिक व्यवस्था उद्ध्वस्त झाली. ज्या सामाजिक आर्थिक व्यवस्थेच्या विरोधात बिरसा मुंडा यांनी उलगुलान म्हणून जाहीर केले. तेव्हा बिहार झारखंड छत्तीसगड पश्चिम बंगाल या आदिवासी भागामध्ये आणि महाराष्ट्रात बिरसा मुंडा यांना पूजनीय भगवान क्रांतिकारी धरती म्हणून पूजा केली जाते. बिरसा यांनी आपल्या आयुष्याच्या पंचवीस वर्षांमध्ये छोट्या जीवनाच्या कालखंडात त्यांनी आपल्या अनुयायाकरिता फार मोठी क्रांती घडवून आणली. ही भारत वासीयांसाठी अतुलनीय एक मोठी बाब आहे. बिरसा मुंडा यांचे धर्मांतरण, शोषण, अन्याय, अत्याचार, पीडित, महिला अन्यायाच्या विरोधात सशस्त्र क्रांती घडवून आणणारा महानायक महामानव भगवान बिरसाच आहे. भारतात मध्ये छोट्या नागपूरच्या क्षेत्रात आदिवासी नेतृत्व भगवान बिरसा मुंडा यांनी इंग्रजांच्या विरोधात फार मोठे संघर्षात्मक आंदोलन केले. या महामानवास अन्यायाच्या विरोधात लढणाऱ्या क्रांतिकारकास विनम्र अभिवादन!

\*\*\*\*\*



**DR. A. B. KULKADE**

Co-ordinator (ई-बुक) ISBN-978-93-89478-20-4

Arts & Commerce College, Jarud





Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Santalpatti

पान नं. ४७







समाजशास्त्रीय  
संकल्पना और सिद्धान्त  
Sociological Concept & Theory

**समाजशास्त्रीय**  
**संकल्पना और सिद्धान्त**  
Sociological Concept & Theory

**DR. A. B. KUKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
**Arts & Commerce College**  
Jarud, Ta. Jarud, Dist. Amn.



**समाजशास्त्रीय**  
**संकल्पना और सिद्धान्त**  
Sociological Concept & Theory

डॉ. राम कुलसंभे



एबीडी पब्लिशर्स

**DR. A. B. KUKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati



## एबीडी पब्लिशर्स

"बोनी रेजिडेन्सी" गेट नं. 2, तिलक पब्लिक स्कूल के पास,  
विश्वेश्वरिया नगर, गोपालपुर रोड़, जयपुर-302018

(राजस्थान) भारत

फोन : 0141-2761280, 2761381

Email: abdpublishersjpr@gmail.com

दिल्ली कार्यालय : 102, प्रथम मंजिल, 'सत्यम हाउस'

4324/3, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002

फोन : 011-45652440

website: www.oxfordbookcompany.com

प्रथम संस्करण 2019

लेखक

ISBN 9788183766852

मूल्य : ₹ 1495.00

प्रकाशन से पूर्व लिखित अनुमति प्राप्त किये बिना मात्रा उद्धरण के अतिरिक्त अन्य किसी भी उद्देश्य से इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का किसी भी रूप में यांत्रिक, इलेक्ट्रॉनिक, फोटोस्टेट, ध्वन्यालेखन अथवा अन्य किसी भी विधि से प्रतिलिपीकरण, प्रेषण अथवा अनुवाद सर्वत्र निषिद्ध है।

**DR. A. B. KUKADE**

Co-ordinator,  
Arts & Commerce College, Jarud



Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati

## अनुक्रमणिका Contents

भूमिका	
1. समाजशास्त्र की परिभाषा एवं विषय क्षेत्र	vii
Definition and Scope of Sociology	1
2. समाजशास्त्र की पद्धतियाँ	27
Methods of Sociology	
3. मानव तथा समाज	38
Man and Society	
4. समाजीकरण	53
Socialization	
5. रुचियाँ और मनोवृत्तियाँ	67
Interests and Attitudes	
6. सामाजिक संरचना	70
Social Structure	
7. सामाजिक व्यवस्था	80
Social System	
8. सामाजिक समूहों के प्रकार	91
Types of Social Groups	
9. सामूहिक व्यवहार	120
Collective Behaviour	



अनुक्रमणिका

1. परिवार .....	130
The Family	
12. विवाह .....	159
Marriage	
13. भारत में सामाजिक स्तरीकरण .....	177
Social Stratification in India	
14. राज्य .....	202
The State	
15. सामाजिक नियंत्रण का अर्थ एवं स्वरूप .....	225
The Meaning and Nature of Social Control	
16. आदर्श नियम एवं मूल्य .....	243
Norms and Values	
17. लोकरीतियाँ एवं लोकाचार .....	252
Folkways and Mores	
18. धर्म एवं नैतिकता .....	267
Religion and Morality	
19. सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त .....	291
Theories of Social Change	
20. सामाजिक परिवर्तन के कारक .....	311
Factors of Social Change	
21. संस्कृति एवं सभ्यता .....	336
Culture and Civilization	

DR. A. B. KUKADE  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



*(Signature)*  
Principal

Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati

## भूमिका Preface

समाजशास्त्र अर्वाचीन सामाजिक विज्ञान है। 'सोशियोलॉजी शब्द लैटिन शब्द' 'सोसायटस' एवं यूनानी शब्द 'लोगस' को मिलाकर बना है। 'सोसायटस' का अर्थ है 'समाज' तथा 'लोगस' का अर्थ है 'अध्ययन' अथवा 'विज्ञान'। अतएव समाजशास्त्र का शाब्दिक अर्थ 'समाज का विज्ञान' हुआ। प्रो. गिन्सबर्ग ने इसकी परिभाषा समाज अर्थात् मानवीय अन्तक्रियाओं एवं अन्तःसम्बन्धों के ताने-बाने का अध्ययन के रूप में की है। दूसरे शब्दों में, समाजशास्त्र समूहों के व्यवहार अथवा मनुष्यों के मध्य अन्तक्रियाओं सामाजिक सम्बन्धों एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन सामिल किया है। अतः मेरी पहली पुस्तक 'सामाजिक मानवशास्त्र' को प्रकाशित की जा चुकी है। अंत में इस विषय की अपनी अपनी अलग अलग महत्व है। इस महत्वों को मैं मेरे सामने देखते हुए प्रस्तुत भारतीय सभी विश्वविद्यालयों के पाठकों, छात्राओं, छात्रों, एवं प्रभूत्व नागरिकों के लिए मैं विमोचन करने जा रहा हूँ।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक लिखते समय महत्वपूर्ण योगदान है ऐसे कुछ सौ. प्रिया, चि.गौरव, कु. भाग्यश्री जीवनकी प्रेरणा, विचार, औपचारिकता से आलोचनात्मक प्रस्तुत की गई हैं। इस पाठ्यपुस्तक में विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के सभी विद्यार्थी, विद्यार्थियों, संशोधन, प्रभूत्व नागरिकों के निमित्त लिखी गई हैं। इस पुस्तक की भाषा सरल सुबोध और सुगम बनाने की कोशिश की गई है। प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री को प्रमाणित एवं वैज्ञानिक बनाने की हर संभव कोशिश की गई है। प्रकाशक ने मेरे किताब को उत्तम स्वरूप देने का सहयोग दिया उनका आभारी हूँ। आशा है, कि प्रस्तुत पुस्तक छात्रों, छात्राओं एवं अन्य पाठकों के ज्ञानवर्धक में जरूर साहयता होंगी। सभी आदरणीय मान्य गण और पाठकों को विनम्र निवेदन है कि यदि इस पुस्तक में कुछ कमियां रह गई हैं तो मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। त्रुटियां कोई सुझाव हैं तो मेरा ध्यान आकृष्ट करें उनके लिए मैं आपका अत्यंत कृतज्ञ रहूंगा।

डॉ. राम कुलसिंगे



2018-19



SEM - III

# निवडक राज्यघटना आणि आंतरराष्ट्रीय संबंध



प्रा. डॉ. व्ही.एच. भटकर

प्रा. डॉ. प्रमोद तालन

प्रा. डॉ. पंकज नंदेश्वर

नभप्रकाशन

DR. A. W. KUKADE  
Co-ordinator  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati



निवडक राज्यघटना आणि आंतरराष्ट्रीय संबंध  
(ब्रिटन, अमेरिका आणि सार्क)

■ प्रकाशन क्र-२८६१

■ प्रथमावृत्ती  
१ डिसेंबर २०१८

■ © नभ प्रकाशन व

प्रा. डॉ. व्ही. एच. भटकर

“श्री” ४६-अ, पूर्वा टाऊनशिप, अर्जुन नगर  
ते शेगाव नाका रोड, अमरावती-४४४६०४  
मो. ९४२१७९०१०३, ७७९८०५८७५९.

■ प्रकाशक

मिलिंद डाहाके

नभ प्रकाशन,

श्याम नगर, काँग्रेस नगर रोड, अमरावती.

मो.-७७९८२०४५००, ८१७७८३८४००

Email-nabhprakashan@gmail.com

Wec-www.nabhprakashan.com

■ मुखपृष्ठ संकल्पना

राहुल कुमार

■ अक्षर जुळवणी

उमेश बावणकर

■ मुद्रक

‘नभ प्रिंटर्स’


शाम नगर, काँग्रेस नगर रोड, अमरावती.

■ मूल्य-९०/- रु.

ISBN- 978-81-905776-60-9

  
**DR. A. B. KORADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Tal. Wairud, Dist. Jalgaon



# चीनची शासन व्यवस्था (भारत - चीन संबंधात) आणि संयुक्त राष्ट्रे

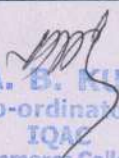


प्रा. डॉ. व्ही.एच. भटकर

प्रा. डॉ. प्रमोद तालन

प्रा.डॉ. पंकज नंदेश्वर

नभप्रकाशन

  
**DR. A. B. KULKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
**Arts & Commerce College**  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati



चीनची शासन व्यवस्था (भारत - चीन संबंधासह) आणि संयुक्त राष्ट्रे

■ प्रकाशन क्र-२८६०

■ प्रकाशन दिनांक  
१ डिसेंबर २०१८

■ © नभ प्रकाशन व

प्रा. डॉ. व्ही. एच. भटकर

“श्री” ४६-अ, पूर्वा टाऊनशिप, अर्जुन नगर

ते शेगाव नाका रोड, अमरावती-४४४६०४

मो. ९४२१७९०१०३, ७७९८०५८७५९.

■ प्रकाशक

मिलिंद डाहाके

नभ प्रकाशन,

श्याम नगर, काँग्रेस नगर रोड, अमरावती.

मो.-७७९८२०४५००, ८१७७८३८४००

Email-nabhprakashan@gmail.com

Web-www.nabhprakashan.com

■ मुखपृष्ठ संकल्पना

राहुलकुमार

■ अक्षर जुळवणी

उमेश बावणकर

■ मुद्रक

‘नभ प्रिंटर्स’

श्याम नगर, काँग्रेस नगर रोड, अमरावती.

■ मूल्य-९०/- रु.

ISBN- 978-81-905776-49-6

DR. A. V. KUKADE  
Co-ordinator,  
TOAC  
Arts & Commerce College, Jarud



Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati







# सामाजिक मानवशास्त्र Social Anthropology

डॉ. राम कुलसणे

**DR. A. B. KUKADE**  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal

Arts & Commerce College  
Jarud, Ta. Warud, Dist. Amravati

  
इशिका पब्लिशिंग हाउस  
जयपुर दिल्ली



## इशिका पब्लिशिंग हाउस

ए-25, "गणेश सदन", गली नं. 4, आदर्श बस्ती,  
बी.एल. हाउस के पास, टॉक फाटक,  
जयपुर-302018 (राजस्थान) भारत  
फोन: 0141-2761280, Mob. 9887532741  
Email: ishikapublishinghouse@yahoo.in

दिल्ली कार्यालय : 102, प्रथम मंजिल, 'सत्यम हाउस'  
4324/3, अंमारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 110 002  
फोन : 011-45652440

© प्रकाशक, 2018

ISBN: 9789385302754

मूल्य : ₹ 1495/-

प्रकाशन से पूर्व लिखित अनुमति प्राप्त किये बिना मात्रा उद्धरण के अतिरिक्त अन्य किसी भी उद्देश्य से इस ग्रन्थ के किसी भी अंश का किसी भी रूप में यांत्रिक, इलेक्ट्रॉनिक, फोटोस्टेट, ध्वन्यालेखन अथवा अन्य किसी भी विधि से प्रतिलिपीकरण, प्रेषण अथवा अनुवाद सर्वत निषिद्ध है।

टाइपसेटिंग : बी.एस. कम्प्यूटर्स, जयपुर

मुद्रक : धर्मसन प्रेस, नई दिल्ली

DR. A. B. KUKADE  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Ra. Warud, Dist. Amravati

## अनुक्रमणिका Contents

	vii
1. सामाजिक मानवशास्त्र: अर्थ एवं परिभाषा Social Anthropology: Meaning and Definition	1
2. सामाजिक मानवशास्त्र की अभ्यास पद्धतियाँ Social Anthropology: Meaning and Definition	9
3. आदिम सामाजिक संगठन Primitive Social Organisations	19
4. वंश परम्परा, वसीयत, उत्तराधिकार एवं आवास व्यवस्था Dynasty Tradition, Bequest, Inheritance and Housing System	29
5. भारतीय वंश का वर्गीकरण Racial Classification of Indian	42
6. आदिकालीन समाजों में विवाह Marriage in Primitive Societies	52
7. परिवार का अर्थ, प्रकार तथा प्रकार्य Meaning, Types and Functions of Family	80
8. नातेदारी एवं गोत्र व्यवस्था Kinship and Clan System	104
9. टोटमवाद Totemism	128
10. जनजाति की अर्थव्यवस्था Schedule Tribal Economic	140



11. भारतीय जनजातियों का आर्थिक जीवन Economic Life of Indian Tribes	165
12. अनुसूचित जनजातीय न्याय तथा सरकार Schedule Tribal Justice and Government	195
13. धर्म व जादू टोने Religion and Magic Sorcery	218
14. आदिवासी समाज में महिलाओं की स्थिति Tribal Condition of Women in Society	242
15. आदिकालीन कला Primitive Art	262
16. भारतीय जनजातियों की समस्याएँ Problems of Indian Tribes	272
17. निषेध Taboo	283
Bibliography	290

## भूमिका Preface

बदलाव ये निसर्ग का नियम है। उसी हेतु आज का मानव एक दुःशर, बुद्धि शील, चतुर विकसित प्राणी है। इस मानव जाती कि बुद्धि दिनों दिन बढ़ती जा रही है। ये एक मानव जाती के लिये 'शगुन' है। मानव जाती का विकास ही उसी समाज में एवं उनकी समस्याओं के विषय में बढ़वा मिल रहा है। इस समस्याओं को समझने में मैं सामाजिक मानवशास्त्र का परिचय एवं भूमिका इस पुस्तक द्वारा प्रथम संशोधित संस्करण कुछ संक्षिप्त रूप में अदा करना चाहता हूँ। जब भी आदिम जनजाति का आधुनिक मानव समाज और उनकी संस्कृति को समझना महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। 'सामाजिक मानवशास्त्र' ये एक ऐसा विषय है, जो प्राचीन आदिमानव समाज और उनकी संस्कृति को समझने में सहायता और उपकारक होता है। अंत में इस विषय की अपनी अपनी अलग अलग महत्व है। इस महत्त्वों को मैं मेरे सामने देखते हुए प्रस्तुत भारतीय सभी विश्वविद्यालयों के पाठकों, छात्राओं, छात्रों, एवं प्रभूत्व नागरिकों के लिए मैं विमोचन करने जा रहा हूँ।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक लिखते समय महत्वपूर्ण योगदान है ऐसे कुछ सौ. प्रिया, चि. गौरव, कृ. भाग्यश्री जीनको प्रेरणा, विचार, औपचारिकता से आलोचनात्मक प्रस्तुत की गई हैं। इस पाठ्यपुस्तक में विभिन्न विश्वविद्यालयों के स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं के सभी विद्यार्थी, विद्यार्थिनियों, संशोधन, प्रभूत्व नागरिकों के निमित्त लिखी गई हैं। इस पुस्तक की भाषा सरल सुबोध और सुगम्य बनाने की कोशिश की गई है। प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री को प्रमाणित एवं वैज्ञानिक बनाने की हर संभव कोशिश की गई है। प्रकाशक ने मेरे किताब को उत्तम स्वरूप देने का सहयोग दिया उनका आभारी हूँ। आशा है, कि प्रस्तुत पुस्तक छात्रों, छात्राओं एवं अन्य पाठकों के ज्ञानवर्धक में जरूर साहयता होंगी। सभी आदरणीय मान्य गण और पाठकों को विनम्र निवेदन है कि यदि इस पुस्तक में कुछ कमियाँ रह गई हैं तो मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। त्रुटियाँ कोई सुझाव हैं तो मेरा ध्यान आकृष्ट करें उनके लिए मैं आपका अत्यंत कृतज्ञ रहूँगा।

डॉ. राम कुलसिंगे

DR. A. B. KUKADE  
Co-ordinator,  
IQAC  
Arts & Commerce College, Jarud



  
Principal  
Arts & Commerce College  
Jarud, Tal. Jarud, Dist. Amravati